शास्त्रीय अल्पज्ञता के रोचक उदाहरण

पण्डित अनन्त शर्मा
भारतीय विद्या मनीषी, वेदपुराणस्मृति शोधपीठ
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान
जयपुर

मैंने लगभग 100 वर्षों तक के पंचांग देखे हैं, उनमें कहीं भी याज्ञवल्क्य का जन्म दिवस नहीं है। यद्यपि यह आधुनिक समय के कलैंडरों में तो अवश्य दिखाई देता है। मुझे लगा कि इन कैलेंडर वालों ने अधिक से अधिक ऐसे संग्रह करने की दृष्टि से एक अच्छा काम किया कि कम से कम भगवान याज्ञवल्क्य को याद तो किया। लोक में याज्ञवल्क्य के सम्मान की जहाँ तक बात करें तो याज्ञवल्क्य का नाम तो खूब प्रसिद्ध है, किंतु, याज्ञवल्क्य को हम ऋषि पंचमी आदि समय में याद करते हैं। याज्ञवल्क्य की कुछ विशेषताओं को हम देखते हैं। जिस विवस्तु गंधर्व के साथ याज्ञवल्क्य का चारित्रिक संबंध है और विवस्तु उनकी खुले दिल से प्रशंसा करते हुए कहता है कि ब्रह्मसभा में भी आपका नाम है। ऐसे याज्ञवल्क्य को अब कितना पुराना माना जाए? यह एक प्रश्न खड़ा होता है ,क्योंकि विवस्तु तो कश्यप की संतति के रूप में है।

हम लोगों ने कुछ कामों के विषय में बड़े प्रमाद का परिचय दिया है। आज बहुत से समाचार पत्रों आदि में अशुद्ध लिखते हैं यह हमारी छोड़ी हुई प्रणाली का असर है। हमारे यहां चार आश्रम माने जाते हैं। पहले आश्रम का नाम ब्रम्हचर्य है जिसका अर्थ हमने समझ रखा है कि जीवन को चार भागों में बाँटना है, और सबसे पहला जो भाग है वह ब्रह्म को अर्पित कर दो। ब्रह्मचर्य के बाद दूसरा गृहस्थाश्रम आता है इसको हम किसका आश्रम बोलेंगे? जैसा ब्रम्हचर्य में बोला था। देखिए ये हमने कभी पढ़े नहीं है। तो हम क्या कह सकते हैं? यह प्राजापत्य आश्रम है। तीसरे आश्रम का नाम वानप्रस्थ आश्रम रखा है। वानप्रस्थ का अर्थ हम वन में प्रस्थान कर जाना लेते हैं। वन से संबंधित वान है और प्रस्थ का अर्थ जाना होता है। हमारे यहां प्रस्थ का अर्थ वितरित भी है जैसे सोनीपत। यह आज प्रसिद्ध है, यह संस्कृत की दृष्टि से स्वर्णप्रस्थ होगा।

प्रस्थ शब्द का अर्थ जहां पर प्रकृष्ट रूप से है, जिसके ऊपर हम स्थित हैं वह प्रमुख रूप से, प्रधान रूप से हमारी स्थिति का स्थान प्रस्थ है। अब वानप्रस्थ का अर्थ क्या हुआ? एक बात यह है। दूसरी आयुर्वेद में तो कई जगह आता ही होगा, कि अपने जो नाप-तोल है उसमें एक प्रस्थ भी है। एक सेर अथवा एक किलोग्राम के तुल्य एक प्रस्थ होता है। अब आप सोचिए वानप्रस्थ का दूसरा अर्थ यदि देखें तो वन में रह कर संपूर्ण जीवन की सुविधाओं को एक प्रस्थ तक ही सीमित कर देना बाकी अपने आप को समेट लेना यह वानप्रस्थ का अर्थ है।

अभी यदि आप वानप्रस्थ का अर्थ जंगल में जाने वाली बात करते हैं तो मेरे समझ में नहीं आ रहा फिर वानरों का क्या होगा? ''ये वाने रमन्ते ते वानराः।'' जो वन में ही वहाँ की आवश्यकताओं की पूर्ति के द्वारा ही मस्त रहते हों किसी प्रकार की असुविधा उन्हें नहीं होती है, उनका नाम वानर है। अब जरा वानर के मामले में आप किष्किन्धा काण्ड देखें भगवान वाल्मीकि के रामायण में, तो वहाँ आपको पता चलेगा कि वानर कैसे थे। लक्ष्मण भगवान राम के आदेश से सुग्रीव को चेताने के लिए निकलते हैं और कहते हैं ''न सः संकुचितः पन्था येन बालिहतो गतः'' सुग्रीव ये मत भूलो कि जिस रास्ते से मरा हुआ बालि गया है वह बहुत सकड़ा रास्ता है, खूब हजारों व्यक्ति अभी भी उस रास्ते से जा सकते हैं। अगर तुम अपने कर्तव्य से च्युत हुए, मैत्री की चिंता न करोगे, अपने वादे से मुकर जाओगे तो यही रास्ता है। यह संदेश लक्ष्मण लेकर जाते हैं। जब लक्ष्मण किष्किंधा में प्रवेश करता है, तो वहाँ एक-एक व्यक्ति का मकान उनको दिखायी देता है। अब लक्ष्मण की भृकुटि कुछ तनी हुई थी। चेहरे पर हल्के से क्रोध के भाव भी थे। सारे वानर उनको नमस्कार कर दूर चले गए। कोई उनका साथ देने वाला नहीं था। ऐसी अवस्था में भय भी था। अब आप सोचिए ये मकान जाम्बवन्त का है, ये मकान हनुमान का है, यह लक्ष्मण को कैसे पता चला होगा?

इन शास्त्रों को पढ़ने के विषय में अपने स्वतंत्र चिंतन को एक क्षण के लिए भी ढ़ीला न छोड़ें। इसका मतलब मकानों पर ही उन लोगों के परिचय थे। कुछ बातें ऐसी है जो स्वतःसुनने में आती हैं। मुख्य मार्ग पर जो मकान थे उन मकानों के अंदर से जबरदस्त संगीत गायन की ध्वनियां आ रही थी। वानर ! कौन वानर? जिनको हमने भगवान की दी हुई बुद्धि के द्वारा बंदर बना दिया है। उनके परिवार में स्त्रियां गीत गा रही हैं वह भी संगीत के आधार पर गा रही हैं। वह कौन थी? वानरियां? या वानर को हम एक विशेष नाम के रूप में लें। मैं आपको केवल एक बात कहना चाह रहा हूं कि हम लोग आज भी शास्त्र की जय-जयकार कर रहे हैं, किंतु, जिस प्रामाणिकता के साथ, जिस गंभीरता के साथ, जिस व्यापक दृष्टि के साथ हमें शास्त्र पढ़ना चाहिए वैसे नहीं पढ़ पा रहे हैं।

इसका सबसे बड़ा नमूना हमारे सामने किष्किंधा कांड ही है। इस किष्किंधा कांड में वर्णन आ रहा है वहां बालि के, सुग्रीव के और जाम्बवान के घरों में कोई अंतर नहीं है। अरे ! मान लीजिए मकान है अगर आप संपन्न है और मकान के बाहर प्रहरी लगा भी रखा है तो जाम्बवन्त के यहां रीछ होगा और इनके यहां बंदर होगा? किंतु वहां ऐसा कुछ नहीं है। भगवान वाल्मीकि कपिश्रेष्ठ हनुमान् और कपिश्रेष्ठ जाम्बवान् बोलते हैं।

अब जरा सोचिए संस्कृत का सामान्य ज्ञान क्या कहता है? कपियों में जो श्रेष्ठ है इसका मतलब जो स्वयं कपि है इसलिए तो कपियों में श्रेष्ठ है। जब कपियों में श्रेष्ठ है वह कपिश्रेष्ठ जाम्बवान् कपिश्रेष्ठ हनुमान् कह रहा है। तो अब हमने जाम्बवान को रीछ क्यों बना दिया? कभी हमने आज तक सोचा कि यह क्यों चल रहा है? हमारा संपूर्ण समाज और यह एक-दो दिन की बात नहीं है बल्कि ८००-९०० साल से यही चल रहा है। इस जाम्बवान् को रीछ मानते चले आ रहे हैं। वाल्मीकि रामायण के टीकाकार भी ऐसे ही कर जाते हैं। अब जिस वाल्मीकीय रामायण की हमने टीका की है निश्चित है कि अपनी टीका को बहुत अच्छा स्थान दिलाने के लिए ताकि लोगों के समझ में आए। हमने सावधानी भी बरती होगी और इसके बावजूद इस छोटी-सी चीज को नहीं देख पाये कि वाल्मीकि ने जामवंत को ऋक्षराज कहा है, तो क्यों कहा है?

कभी अगर हम थोड़ा-सा ध्यान देते, कि बालि और सुग्रीव दोनों सगे भाई हैं, तो इनके पिता का नाम क्या है? नागेश भट्ट बहुत अच्छे वैयाकरण रहे हैं और गंभीर से गंभीर, सूक्ष्म से सूक्ष्म शास्त्रार्थ करने के लिए उन्होंने जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है यह आज बेचारे इन गरीबों के लिए कष्टकारक है। यह इतने बड़े विद्वान हैं। वे ऋक्षराज का अर्थ ऋक्षरजा करते हैं। सुग्रीव और बालि की मां यह ऋक्षरजा नाम है। नागेश भट्ट यह कहते हैं। यह ऋक्षरजा वास्तविकता में इनके पिता हैं। इतनी बड़ी गलती ऐसा और ऐसा महान् वैयाकरण जिसने संपूर्ण वाल्मीकि रामायण के ऊपर टीका भी की है। वह एक जगह और भी गड़बड़ कर गये हैं।

मैं भगवान् याज्ञवल्क्य के उस स्वरूप को जो सारी बातों को स्पष्ट करता है यह रखने की दृष्टि से ही भूमिका बाँध रहा हूँ । यद्यपि भूमिका शब्द कह कर मैं डराना नहीं चाह रहा हूँ। जब भगवान राम का राज्याभिषेक हो जाता है तो ऋषि अगस्त्य आते हैं और अगस्त्य के व्यक्तित्व के साथ आने वाले सैकड़ों ऋषि हैं। उसी दिन अयोध्याँ पहुँचते हैं। वे भगवान राम का अभिनंदन करने के लिये आते हैं। अब बताइए अगस्त्य जैसा व्यक्ति इतने सारे जनों को लेकर जिस राम का अभिनंदन करने आ रहा है, ऐसा कौन सा जबरदस्त काम राम ने किया है? जो राम अभिनंदन के पात्र हैं? यह हम कभी सोचे ही नहीं। खैर उस जगह वहाँ पर एक-दो बार जान-बूझकर अगस्त्य ऋषि ने मेघनाद की थोड़ी सी

अधिक प्रशंसा कर दी। राम कहने लगे भगवन यह जो रावण है यह तो बहुत प्रसिद्ध है। आप मेघनाद के लिए बार-बार कह रहे हो। यह क्या है? इस प्रकार से एक प्रसंग उठा कर इन सारे राक्षसों के कुल का परिचय भगवान अगस्त्य राम को दे रहे हैं। उत्तर कांड के 40-45 सर्ग लगभग इसी में पूरे हो जाते हैं।

यहाँ हनुमान का परिचय देने का जब अवसर आया तो, उस परिचय को देते-देते हुए इस बात पर समाप्त करते हैं कि देखो राम, यही हनुमान अब तुम्हारे अनुग्रह से ब्रह्मा भी हो जाएगा। ''ब्रह्माऽपि भविष्यति त्वत्प्रासादात्'' 'ब्रह्माऽपि भविष्यति' ब्रह्मा भी हो जाएगा, त्वत्-तुम्हारे, प्रसाद-अनुग्रह से। यहाँ नागेश भट्ट कहते हैं कि अगले कल्प में हनुमान ब्रह्मा बनेंगे। आम आदमी यह गलती करे तो कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि ब्रह्मा प्रसिद्ध है और ब्रह्मा कल्प के बिना बनेंगे नहीं तो ठीक कह दिया यह कोई गलती नहीं कहा, किंतु यहाँ जो कहने वाले व्यक्ति हैं, उसने किस प्रकार से वाल्मीकि रामायण का अध्ययन किया है, यह देखने समझने की बात है।

हमारे यहां ब्रह्म शब्द बहुत सामान्य शब्द है। वैदिक वाङमय की दृष्टि से और आप सब लोग जानते हैं कि एक यज्ञ को पूरा करने के लिए चार ऋत्विज आवश्यक हैं। होता, अध्वर्यु, उद्गाता और ब्रह्मा। इन चारों का स्थान बराबर होने के बावजूद गरिमा में ब्रह्मा इन सबसे बड़ा हो जाता है। 'होता' का अपने एक ऋग्वेद है जिसको हम होतृवेद भी कह सकते हैं। अध्वर्यु का भी एक ही वेद यजुर्वेद है। उद्गाता का भी एक ही वेद है जिसको हम सामवेद कह सकते हैं। किंतु इन तीनों वेद और ऋत्विजों के द्वारा किए जाने वाले संपूर्ण कार्यों को बहुत सुंदर ढंग से करके यज्ञ की पूर्ति तक पहुँचाने का संपूर्ण उत्तरदायित्व जिस शक्ति का है उस शक्ति का नाम ब्रह्मा है। इसलिए ब्रह्मा अकेला त्रिवेदी है। जब यज्ञ की पूर्ति करने वाला ब्रह्मा होता है तो इसका मतलब भगवान यास्क निरुक्त में इस मंत्र की व्याख्या करते हुए कहते हैं ''ब्रह्मा सर्वज्ञः'' ब्रह्मा शब्द का अर्थ सर्वज्ञ लिया है। हे राम ! तुम्हारे संपर्क में आकर हनुमान सर्वज्ञ हो गया और हो जाएगा। इसमें ब्रह्म हो जाने वाली बात कही है ही नहीं। तो एक-एक शास्त्र के शब्द को हम लें और फिर उसके आधार पर ही आगे देखें, तो शास्त्र हमें कितना काम देगा। आज यह सारी त्रुटियाँ नहीं होती।

विजयादशमी को रावण दहन मेरी दृष्टि से महान् पाप है। हम प्रायश्चित की चर्चा तो कर रहे हैं पर ये कौन व्यक्ति तैयार बैठा है जो यह स्वीकार कर ले और प्रायश्चित कर ले? आज से 60 से 70 वर्ष पहले वाराणसी के पत्र में यह प्रश्न उठा था और दबा दिया गया। आप सोचिए इसका मतलब प्रश्न आएगा कि रावण कब मरा? रावण अगर विजयादशमी को जलाया जाता है, तो कोई 4 से 6 महीने बाद तो जलाया नहीं गया कि उसके पीछे से किसी ने प्रतिज्ञा की हो कि जब तक राम का सिर नहीं ले आओगे तब तक रावण का दाह संस्कार नहीं होगा। तो क्या विजयादशमी के

पहले वाली अर्थात आश्विन शुक्ल नवमी के दिन रावण का देहांत हुआ था? जो विजयादशमी को जलाया गया। फिर उसके साथ हम चल पड़े दिवाली के दिन राम के अभिषेक हेतु। वाल्मीकि रामायण में हम यह नहीं पढ़ते हैं। इसमें कोई भयंकर प्रश्न अथवा समस्या भी नहीं है। शास्त्रार्थ बिल्कुल भी नहीं है। दशरथ स्पष्ट घोषणा कर देते हैं कि मैं राम के जन्मदिवस को ही उसका अभिषेक दिवस बनाना चाह रहा हूं, अर्थात ये आने वाली जो रामनवमी है, जो चैत्र शुक्ल नवमी है इसी को राम का जन्म हुआ और इसी को राम का राज्याभिषेक भी होगा।

तुलसीदास जी ने बिल्कुल ठीक किया। उन्होंने यही प्रसंग लिया पर उनको भी हम कहाँ पढ़ते हैं? मोटे-मोटे ग्रंथ तुलसीदास जी और रामायण की प्रतिष्ठा में लिखे जा रहे हैं पर हम ये छोटी-छोटी त्रुटियां कभी नहीं देखेंगे। हमने देखा कि सुषेण जैसे वैद्य को हनुमान कैसे उठा कर ला रहे हैं। एक तरह से इसको क्या कहा जाए? जान-बूझ कर उपेक्षा, या भक्ति के नाम पर सत्यानाश। श्री राम की सेना में तीन सुषेण थे। एक तो बहुत ही प्रसिद्ध है, बालि का श्वसुर अर्थात तारा का पिता। ये सारे वेद वेदांगों में निपुण बल्कि ये उन लोगों में थे कि जिन्होंने समुद्रमंथन से अमृत की प्राप्ति के लिए और संपूर्ण वनस्पति जगत को इकट्ठा करके क्षीर-सागर में डाला और फिर उसका मंथन किया । उनमें सुषेण जाम्बवान जैसे लोग थे। अश्विनीकुमार भी उस समय इस कार्य में सम्मिलित थे। इन सब का हमने मनचाहे ढंग से ही समय को तय कर लिया तो ऐसी अवस्था में आप पूछते हैं कि याज्ञवल्क्य का क्या समय था? तो यह बहुत सार्थक है।

मैं चाहता हूं कि कम से कम अपने विषय के प्रति निष्ठा रखने वाले वस्तुतः अपने शास्त्रों की गरिमा को संपूर्ण श्रद्धा के साथ वास्तविक स्थान पर गिनाने वाले लोग इस बात पर ध्यान दें, प्रतिज्ञा कर लें कि आधुनिक इतिहासकारों ने जो समय दिया है उसमें एक भी ठीक नहीं है। आप जिन स्मृतियों की बातचीत कर रहे हैं, उन स्मृतियों को विषय में लेकर के इतिहास लिखने वाला व्यक्ति पांडुरंग वामन काणे हैं। काणे ने किसी भी स्मृति को इससे 800 से 1000 वर्ष पहले माना ही नहीं है। चलो 800 से 1000 वर्ष पहले मान लिया होगा। काणे जो सारी स्मृतियों को लेकर धर्मशास्त्र का मंथन जो आपके सामने पेश कर रहा है ,उस भले आदमी को इतना होश नहीं है कि महर्षि यास्क और सबसे पहले स्मृतिकार भगवान स्वायंभू मनु इसका उल्लेख करते हैं।

यास्क वह व्यक्ति हैं जिसकी भगवान व्यास ने महाभारत में भरपूर प्रशंसा की है और प्रशंसा करने वाले स्वयं भगवान श्रीकृष्ण हैं । भगवान कृष्ण जिस यास्क का नाम लेकर महाभारत में प्रशंसा कर रहे हैं। आप इतिहास का मंथन कीजिए कि मित्र लोग बैठते थे, भाई लोग बैठते थे, कोई विशेष कार्यक्रम में लोग बैठते ही हैं। कृष्ण अर्जुन जहाँ भी बैठे हैं महाभारत में भगवान व्यास ने बताया उनके सामने यही प्रश्न आते रहे। अर्जुन कहता है कृष्ण ! तुम्हारे बहुत

से नाम है। मैं तुम्हारे प्रमुख-प्रमुख नामों के अर्थ जानना चाहता हूँ। जो आयुर्वेद, ज्योतिष आदि ग्रंथों में नाम है। उस समय यास्क के लिए स्पष्ट शब्दों में कहा जा रहा है कि 'मत्प्रासादात्अधोनष्टंनिरुक्तेऽधिजग्मिवान्'' निरुक्त नष्ट हो चुका था।

मेरे अनुग्रह से जिसने निरुक्त का पुनरुद्धार किया यह वह यास्क है। तो आज हम दो ग्रंथों को देखते हैं ''बहुत समय पहले ही नष्ट हो जाने वाले निरुक्त को जिसने प्राप्त किया है'' अब ये सोचना चाहिए कि क्या कृष्ण अवतार होने के नाते ही सर्वत्र सब कुछ है। या कृष्ण का निजी व्यक्तित्व ही ऐसा है। राम जब पहली बार हनुमान से मिलते हैं और हनुमान बड़े सुंदर ढंग से अपना परिचय दे देते हैं। तब राम कहते हैं कि लक्ष्मण जो व्यक्ति इतनी देर से बोल रहा है तू इसको सुन रहा है न? वेदों का जबरदस्त ज्ञाता जब तक कोई व्यक्ति नहीं होगा, तब तक यह भाषा नहीं बोल सकता।

''नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिण।
नासामवेदाविदुषः शक्यमेवं विभाषितुम्।।''

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद इनमें अच्छे प्रकार से निपुणता प्राप्त जिसने नहीं की है वह व्यक्ति यह भाषा बोल ही नहीं सकता, जो हनुमान बोल रहा है। हनुमान आदि को हम लोगों ने अवतार होने की वजह से या राम का सेवक होने की वजह से इतने ज्ञानी हुए हैं पर राम के जन्म के बहुत पहले ही जो जाम्बवान् हो चुके हैं, उनके विषय में प्रसिद्ध है कि जिस वक्त वामन ने बलि से संपूर्ण वैभव प्राप्त कर इंद्र को लौटा दिया था उस समय इस पृथ्वी का परिमाण करने वाले बलि की मैंने परिक्रमा की है। इसके लिए हमें कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं, वहीं वाल्मीकि रामायण में यह है। जब सब बैठ जाते हैं और सोचते हैं अब क्या करें? जब सीता के बारे में पता चलता है, कि वह रावण के इसी महल में कहीं न कहीं हैं। अब कोई नहीं बोल रहा है, तब आखिर मैं जाम्बवान् बोलते हैं कि देखो मैं तो उस वक्त बलि की परिक्रमा कर चुका था। आज तो मैं जैसे तैसे लंका पहुँच जाऊँगा, किंतु आऊँगा नहीं।